व्यक्तिगत तथा पारिवारिक समस्याओं के लिए आत्मिक परामर्श
समस्याग्रस्त लोगों की सहायता करें जैसे नातान ने की थी।

उन कार्मों का चुनाव करें, जो वर्तमान आवश्यकताओं तथा स्थानीय रिवाज़ों के लिये उपयुक्त हो।

प्रार्थना: ''प्रिय परमेश्वर, प्रेम में सत्य बोलने में मेरी मदद करें।'' इफ़िसियो 4:15

1. इन निर्देशतत्वों का उपयोग करते हुए आत्मिक परामर्श देने की तैयारी करें।

जिनको सुधार की आवयश्कता है, उन को दुखदाई सत्य बताना एक सबसे प्यारी चीज़ है जो आप उनके लिये कर सकते हैं। देखें कि नातान ने किस तरह से परमेश्वर के साथ संगति के लिये दाऊद का पुनरूद्धार करने में सहायता करी (2 शमूएल अध्याय 11 तथा 12)।

1) अगर समस्या व्यक्तिगत है, उसके साथ व्यक्तिगत तरीके से व्यवहार करें, अन्यथा एक छोटे समूह में उसके साथ व्यवहार करें, जिससे कि अन्य लोग भी समझ सकें तथा परमेश्वर की सहायता के लिये प्रार्थना करें।

एक व्यक्ति पूछता है:
मुझ में एक बुरी आदत है। क्या उससे छुटकारा दिलाने में आप मेरी सहायता कर सकते हैं?

एक चरवाहा उत्तर देता है:
यीशु तुम्हारी मदद करेगा। मेरे घर में आओ। हम अकेले में बात करेंगें।

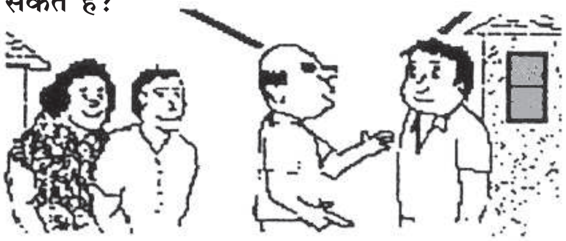

अगर समस्या दूसरे विश्वासी के विरूद्ध अपराध की है, तो मत्ती 18:15-16 में देखें कि अपराधग्रस्त व्यक्ति को क्या करना चाहिए।

2) विपरीत लिंग के लोगों को वहाँ परामर्श दें, जहाँ अन्य लोग आपको देख रहें हों। कभी भी उनसे अकेले में या बन्द दरवाज़ों के पीछे न मिलें। हमको पाप के आभास तक से दूर रहना है। (1 थिस्सलुनीकियों 5:22)।

मैं बहुत हतोत्साहित हूँ। कृपया मेरी सहायता करें।

बगीचे में आईये, जहाँ मेरी पत्नी है।

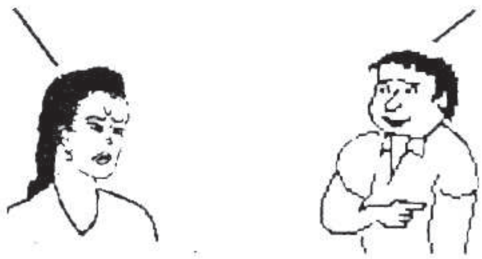

3) समस्याओं के बारे में सिर्फ उन लोगों से बात करें, जो सीधे तौर पर उस व्यक्ति, परिवार या विश्वासियों से संबंधित हो जो समस्या से पीड़ित हैं। एस्तेर ने हामान पर उसके पापी इरादे के लिये तब तक दोष नहीं लगाया जब तक वो उसे उसके तथा राजा के सम्मुखरे नहीं कर सकी जिसको उसने धोखा दिया था (एस्तेर, अध्याय 5 से 7)।

मेरे पति तथा मैं बहुत बहस करते हैं। वो बहुत हठी हैं!

फिर कल हम दोनों उनसे इस बारे में बात करेगें।

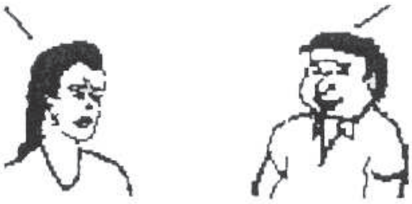

4) जब लोग अपनी समस्या बतायें, तो सुनें। जब तक आप उसके छुपे हुए मूल कारण को न जान लें, तब तक प्रश्न पूछे। याकूब 1:5 में देखें कि एक समस्या को भली प्रकार समझने की आवयश्कता के लिये हमें क्या करना चाहिये।

समस्या यह है कि यहाँ मेरे पति बच्चों की देखभाल में मेरी सहायता नहीं करते हैं।

हाँ, मैं करता हूँ।
समस्या यह है कि तुम उन्हें बहुत अधिक डाँटती हो। तुम उन्हें साधारण बच्चों की तरह खेलने नहीं देतीं।

लोगों की गोपनीय बातों को अपने तक रखें। जो आपने अकेले में सुना उसे अन्य लोगों के आगे ना दोहरायें। नीतिवचन 11:13 में देखें कि लतुराई करने के विषय में परमेश्वर क्या सोचता है।

मेरे चचेरे भाई ने तुमसे क्या कहा जब तुमने उसे परामर्श दिया?

हमें उन बातों को नहीं दोहराना चाहिये जो लोग हमें विश्वस्त समझ कर बताते हैं।

5) परमेश्वर के वचन को समस्या की जड़ (कारण) पर लागू करें। जो आपने प्रारम्भ में सुनीं, सिर्फ उन्हीं शिकायतों पर विचार करने की कोशिश ना करें। वे अक्सर असली समस्या के लक्षण होती है।बुरी सोच क्या परमेश्वर के वचन के द्वारा सुघार करें। “मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चेताओ” कुलुस्सियों 3:16 तीमुथियुस 4:1 में देखें कि किस झूठ को आविश्वासी लोग गले से लगाते हैं।

मैं अपनी बुरी आदत को नहीं रोक सकता। वो बहुत शक्तिशाली है।

तुम्हें शैतान ने यह झूठ बताया है! तुमने उसको यीशु की शक्ति में अपने विश्वास को कमज़ोर करने दिया है। तुम एक व्यस्क हो तथा संकल्प कर सकते हो कि कैसा आचरण करना है।

- अगर अभी भी कोई विश्वास नहीं करता है, तो उसके पश्चाताप करने में तथा यीशु में होकर परमेश्वर की क्षमा खोजने में सहायता करें।

- अगर कोई विश्वास करता है, परन्तु अपने को अयोग्य समझता है, तो उसके साथ इफिसियों अध्याय। पढ़ें, उसे दिखाने के लिये कि परमेश्वर की दृष्टि में वो क्या है, तथा उसे यीशु में हमेशा के लिये क्या मिला है। इसके लिये उसकी परमेश्वर को धन्यवाद करने में सहायता करें।
- अगर कोई असुरक्षित महसूस करता है, तथा डरता है, कि परमेश्वर उसको प्रेम नहीं करता तो उसके साथ रोमियों 8 पढ़ें।
- अगर कोई सोचता है कि परमेश्वर दूर है तथा यीशु उससे क्रोधित है, तो उसे कुलुस्सियों अध्याय 1–3 में दिखायें, कि कैसे यीशु उसके लिये शक्ति तथा परमेश्वर की अदृश्य चीजें लाया है।

6) लोगों की बिल्कुल ठीक प्रकार से परिभाषित करने में सहायता करें कि उन्हें समस्या के समाधान के लिये क्या करना चाहिये; तथा उन्हें परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सहायता से अपने व्यवहार को परिवर्तित करने में सहमत होना चाहिये।

मैंने जान लिया! मुझे अपनी पत्नी से कहने की आवश्यकता है कि मुझे क्षमा करे तथा मुझे उसे क्षमा कर देना चाहिये, तथा उसे परमेश्वर के कहे अनुसार प्रेम करना चाहिये।

यह बिल्कुल ठीक है। मैं तुमसे मिलता रहूँगा, जब तक परमेश्वर पूर्ण रूप से समस्या का समाधान नहीं कर देता।

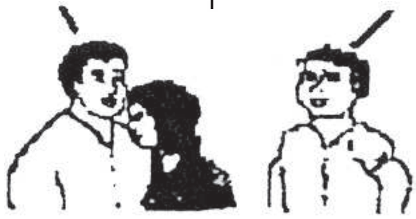

7) सिर्फ उन लोगों को परामर्श दें जो बदलना चाहते हैं अगर लोग अपने व्यवहार को नहीं बदलना चाहते या बिना परिवर्तित हुए। सिर्फ आपसे बात करना चाहते हैं, तो उनसे मिलना बंद कर दें। उन लोगों के साथ समय नष्ट ना करें जो सिर्फ ध्यान चाहते हैं। कुछ लोगों को उत्पीड़ित होने में मज़ा आता है। अन्य लोग सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं। यीशु ने कहा था, “अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो” (मत्ती 7:6)।

2. सहकर्मियों के साथ सप्ताह भर के कार्यों को योजना बद्ध करें।

उपरोक्त निर्देशतत्वों के साथ। परिपक्व विश्वासियों को आत्मिक सलाहकार बनने को तैयार करे, उन लोगों से भेंट करें, जिन्हें परामर्श की आवश्यकता है।

सहकर्मियों के साथ आराधना के समय का योजना बनाएं।

बताएं, कि कैसे नातान ने दाऊद को परामर्श दिया था (2 शमूएल अध्याय 11–12)

उपरोक्त परामर्श के निर्देशतत्वों में से कुछ के लिये बाईबल के आधारों की व्याख्या करें।

परमेश्वर का धन्यवाद करें, या आत्मिक परामर्शों के द्वारा हाल की विजयों का विवरण दें।

बालकों को नाटक, कविता तथा प्रश्न जो उन्होंने तैयार किये हैं, प्रस्तुत करने दें।

1 कुरिन्थियों 14:3 साथ साथ स्मरण करें।

प्रभु भोज प्रस्तुत करते हुए, संक्षेप में 1कुरिन्थियों। 11:28–32 में पाई गई चेतावनी को समझायें।

प्रार्थना के योजना बनाने के लिये तथा आत्मिक परामर्श देने व लिये लेने के लिये।